बकरी पालन संबंधी उपयोगी जानकारी

बकरी पालन भूमिहीन एवं छोटे किसान परिवारों के लिए एक फायदेमन्द व्यवसाय है। लेकिन इस व्यवसाय में छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना जरूरी है, अन्यथा बड़े नुकसान की संभावना रहती है ।

बकरियों की आवास व्यवस्था

- आवास धूप, बारिश, ठंड और जंगली जानवरों से बचाने में सक्षम हो।
- प्रति बकरी 10 वर्ग फिट की जगह उपलब्ध हो।
- आवास स्थल समतल, सूखा और साफ-सुथरा होना चाहिए।
- हवा का आवागमन अच्छा हो, ताकि पेशाब, गोबर की बदबू ना रहे।
- सूखी घास बिछाकर व बोरे के पर्दे लगाकर सर्दी से बचाव करना चाहिए ।
- सूरज की रोशनी से आवास में पनपने वाले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।
- गाभिन, दुधारू और बीमार बकरियों को नर बकरों से अलग आवास में रखें।
- कीटाणु नाशक दवा का इस्तेमाल कर खाने-पीने के बर्तनों को रोज साफ करें।

हर तीन माह में ध्यान देने वाली बातें

- फिनाइल या अन्य कीटाणुनाशक का छिड़काव कर आवास को कीटाणु रहित करें।
- आवास की दीवारों की चूने से पुताई करें।
- परजीवियों को मारने के लिए दवाईयों का प्रयोग करें।
- परजीवी बीमारियों से बचाव हेतु साल में एक बार आवास की मिट्टी को जरूर बदले ।

सितम्बर 2024 अक्टूबर

1	8	15	22	29	रवि		6	13	20	27
2	9	16	23	30	सोम		7	14	21	28
3	10	17	24		मंगल	1	8	15	22	29
4	11	18	25		बुध	2	9	16	23	30
5	12	19	26		गुरू	3	10	17	24	31
6	13	20	27		शुक्र	4	11	18	25	
7	14	21	28		शनि	5	12	19	26	

16 सितम्बर - मिलाद-उन-नबी

02 अक्टूबर - महात्मा गांधी जयंती, 12 अक्टूबर - दशहरा, 17 अक्टूबर - वाल्मीकि जयंती, 31 अक्टूबर - दीपावली

समर्थन सेन्टर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट, भोपाल
36, ग्रीन एवेन्यू , चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल- 462016, मध्यप्रदेश
ई-मेल : info@samarthan.org | वेबसाइट : www.samarthan.org

बकरियों का खान-पान

दुधारू, गाभिन, बच्चे वाली बकरी तथा प्रजनन के काम आने वाले बकरों को उनके वजन व उत्पादन के अनुसार संतुलित दाना, चारा तथा पोषण आहार खिलाना चाहिए। पैरों से रौंदा या मिट्टी लगा चारा खाने के बजाए बकरियां भूखा रहना पसंद करती हैं।

तालिका -1 : बकरियों द्वारा पसंद किए जाने वाले दलहनी और गैर दलहनी चारे

क्र	चारे की किस्म	दलहनी चारे	गैर दलहनी चारे
1	सूखे चारे	**भूसा-** चना, मटर, अरहर, मूंग, उड़द, ज्वार, ग्वार, सेम, मटर व सनई	**भूसा**– गेहूं, जौ व जई, **कड़बी**–ज्वार, बाजरा व मक्का, **सूखी घास**
2	सूखे चारे	बरसीम, लुसर्न, मटर, लोबिया, ग्वार, स्टाइलो, नैपियर आदि	ज्वार, बाजरा, मक्का, मक्का चरी, पैरा, घास, जई व मानसूनी घासें

तालिका -2 : एक वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए दाना मिश्रण का संगठन

क्र	खाद्य पदार्थ	भाग
1	मक्का दाना	47
2	मूंगफली की खली	30
3	गेहूं का चोकर	20
4	खनिज मिश्रण	1.5
5	साधारण नमक	1.5
	योग	**100**

तालिका – 3 : बकरी के बच्चों में अपेक्षित शारीरिक वृद्धि के अनुसार दूध तथा दाने की दैनिक आवश्यकता

आयु	प्रतिदिन अपेक्षित शारीरिक वृद्धि					
	150 ग्राम$_1$		100 ग्राम$_2$		50 ग्राम$_3$	
	दूध की मात्रा	दाने की मात्रा	दूध की मात्रा	दाने की मात्रा	दूध की मात्रा	दाने की मात्रा
जन्म के 15 दिन	500 ग्राम	-	400 ग्राम	-	200 ग्राम	-
15 दिन से 1 माह	800 ग्राम	120.0 ग्राम	600 ग्राम	75.0 ग्राम	300 ग्राम	40.0 ग्राम
1 से 2 माह	700 ग्राम	175.0 ग्राम	500 ग्राम	110.0 ग्राम	260 ग्राम	60.0 ग्राम
2 से 3 माह	400 ग्राम	300.0 ग्राम	300 ग्राम	200.0 ग्राम	150 ग्राम	100.0 ग्राम

खान-पान से जुड़ी सावधानियां

- एक ही चारागाह में ज्यादा समय तक चराने से कृमि रोग का खतरा रहता है।
- बीमार बकरी को चराई के लिए बाहर नहीं भेजना चाहिए।
- गर्भावस्था के अंतिम 2 सप्ताह में और बच्चे को जन्म देने के 2 सप्ताह तक बकरी को बाहर चरने न भेजें।
- प्रजनन को नियंत्रित करने के लिए बकरियों को बकरे के साथ चरने न भेजें।
- बकरियों को रोज 6 से 7 घन्टे चरने के लिए छोड़ना बहुत जरूरी है।
- बकरियों को बड़े पशुओं के साथ चरने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए।
- दाने की आधी मात्रा बकरियों को चरने के लिए छोड़ने से पहले और आधी मात्रा वापस आने पर दें।
- बारिश में सूखा चारा जैसे चना/ तुवर का भूसा 400 से 500 ग्राम प्रति बकरी खिलाना चाहिए।

तालिका -4 : वयस्क बकरियों के लिए दाना मिश्रण का संगठन

क्र	खाद्य पदार्थ	भाग
संगठन -1		
1	जौ या मक्का या ज्वार या बाजरा	32
2	खली (मूंगफली/ अलसी/ तिल/ सूरजमुखी की)	30
3	गेहूं या चावल की चोकर	20
4	दाल चुनी	15
5	खनिज मिश्रण	1.5
6	साधारण नमक	1.5
	योग	**100**
संगठन -2		
1	सूखी नीम की पत्तियां	30
2	दाना मिश्रण	70
	योग	**100**

समर्थन सेन्टर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट, भोपाल
36, ग्रीन एवेन्यू, चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल- 462016, मध्यप्रदेश
ई-मेल : info@samarthan.org | वेबसाइट : www.samarthan.org

बकरियों की मुख्य बीमारियां व रोकथाम

क्र	बीमारी का नाम	बीमारी का स्रोत	संक्रमण काल	लक्षण	बचाव एव उपचार
1	बकरी चेचक	हवा द्वारा, छुआ-छूत, घाव व संक्रमित वस्तुओं द्वारा	2 से 7 दिन	तेज बुखार, आंख व नाक से स्त्राव होना, श्वांस तेज चलना, खाना-पीना छोड़ देना, त्वचा में लालिमा युक्त फफोले जो कि कुछ समय बाद पपड़ी में बदल जाते हैं। बीमारी से मृत्यु दर प्रति 100 बकरी 15 से 20	बचाव हेतु टीकाकरण, बीमार बकरियों को स्वस्थ्य बकरियों से अलग रखना और साफ- सफाई रखना।
2	कंटेजियस एक्थाइमा (मुहा)	छुआ-छूत से फैलता है, वैसे तो यह साल भर होता है लेकिन गर्मी और बसंत ऋतु में अधिक होता है	7 दिन	बच्चों पर अधिक प्रभाव, मुंह व होठों पर लालिमा युक्त फफोले देखे जाते हैं जो 3-4 सप्ताह में ठीक भी हो जाते हैं। कई बार फफोले व घाव मुंह तथा नांक में भीतर तक फैल जाते हैं। इस रोग में मृत्यु दर बहुत कम है।	इस बीमारी का टीका उपलब्ध नहीं है। साफ-सफाई रखना चाहिए और घावों का उपचार कराना चाहिए।
3	भुखमरी (एफएमडी)	यह एक महामारी और छुआ-छूत वाली बीमारी है	3 से 4 दिन	तेज बुखार, उत्पादन में कमी, मुंह से लार बहना, मुंह के अन्दर फफोले, घाव। खुरों के बीच भी घाव हो सकते हैं, जिसके कारण पशु लंगड़ाने लगता है।	बीमार बकरी को अन्य बकरियों से दूर रखें। मुंह के घावों में बोरो ग्लिसिरीन लगायें व पैरों के घावों को पोटेशियम परमेगनेट से साफ कर हिमेक्स मलहम लगायें। विटामिन 'ए' के टीके तथा जिंक लवण भी उपयोगी है।
4	बकरी प्लेग (पीपीआर)	महामारी है जो रोगी बकरी के आंख के पानी, मल-मूत्र, बलगम के सम्पर्क और श्वांस के माध्यम से तेजी फैलती है।	3 से 5 दिन	106 डिग्री सेल्सियस तक तेज बुखार, जीभ, तालू, होंठ तथा मुंह के अंदर छाले पड़ना, दस्त, सर्दी, खांसी, श्वांस में तकलीफ, पेचिस, गर्भपात। इस रोग में बकरियों की मृत्यु दर सबसे अधिक है।	वार्षिक टीकाकरण करायें। बाहर से लाये पशुओं को एक सप्ताह अलग रखें, निरोगी सिद्ध होने पर ही झुण्ड में मिलायें।
5	निमोनिया (सीसीपीपी)	फेफड़ों को प्रभावित करने वाला घातक रोग है। यह छुआ-छूत एवं मुख्य रूप से श्वांस के द्वारा फैलता है।	6-10 दिन	शत-प्रतिशत पशु प्रभावित हो सकते हैं। मृत्यु दर 60 से 100 प्रतिशत है। खांसी, श्वांस लेने में तकलीफ, चलने में पिछड़ना, लंगड़ाहट, बुखार, मुंह से श्वांस लेना, जीभ निकालना, झागदार लार बहना।	सूखे, नमी रहित आवास में रखें, संतुलित आहार दें। इस दौरान कृमिनाशक दवा न दें और बारिश में चरने न छोड़ें।
6	गलघोंटू	महामारी, रोग ग्रस्त बकरी द्वारा संक्रमित आहार खाने से, श्वांस द्वारा फैलता है।	2 दिन	तेज बुखार, भूख न लगना, गले, गरदन व जीभ पर सूजन, नाक, आंख व मुंह से पानी बहना, श्वांस लेने में तकलीफ, घुर्र-घुर्र की आवाज निकालना। 12-14 घंटे में मृत्यु।	टीकाकरण, साफ- सफाई रखना, बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना।
7	दस्त या आंत्र विषाक्त (ऐन्ट्रो टॉक्सीमिया)	6 से 8 माह के बच्चों में होने वाला भयानक रोग है, ठंडी में अधिक होता है।	2 से 3 दिन	पेट फूलना, श्वांस लेने में तकलीफ, दस्त, लड़खड़ाना, मुंह से झाग आना, जबड़ों में जकड़न, पेटदर्द, गम्भीर सुस्ती भी देखी जा सकती है।	टीकाकरण करायें, आवास में साल भर में 3-4 बार चूने का छिड़काव करें। नवजात शिशुओं को मां का पहला दूध/खीस जरूर पिलायें।
8	कुकड़िया रोग या कॉक्सी डियोसिस	आवास में गंदगी, दूषित आहार व पानी तथा आहार में पौष्टिक तत्वों की कमी बीमारी फैलाने में सहायक	2 से 3 सप्ताह	खून मिश्रित दस्त, कमजोरी, मृत्यु दर 10 प्रतिशत	साफ-सफाई रखें, वयस्क और बच्चों को अलग-अलग आवास में रखें, आवास सूखा रखें, समय-समय पर जीवाणुनाशक दवा का छिड़काव करें।

जनवरी 2025 फरवरी

	5	12	19	26	रवि		2	9	16	23
	6	13	20	27	सोम		3	10	17	24
	7	14	21	28	मंगल		4	11	18	25
1	8	15	22	29	बुध		5	12	19	26
2	9	16	23	30	गुरू		6	13	20	27
3	10	17	24	31	शुक्र		7	14	21	28
4	11	18	25		शनि	1	8	15	22	

13 जनवरी - लोहड़ी, 14 जनवरी- मकर संक्रांति, 26 जनवरी - गणतंत्र दिवस

8 फरवरी - महाशिवरात्रि,

समर्थन सेन्टर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट, भोपाल
36, ग्रीन एवेन्यू , चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल- 462016, मध्यप्रदेश
ई-मेल : info@samarthan.org | वेबसाइट : www.samarthan.org

बकरियों में होने वाले अन्य रोग

1. अफरा – पेट में गैस बनना, पेट फूलना।

कारण – संतुलित आहार न देना, जरूरत से ज्यादा हरा चारा खिलाना, सड़ा-गला बासी खाना देना या गले पर दबाव पड़ना।

लक्षण – पीड़ित बकरी को बैचेनी, श्वांस लेने में कठिनाई और बांयी कोख फूल जाती है। फूली हुई कोख थपथपाने से ढोलक जैसी आवाज आती है।

रोकथाम – हमेशा संतुलित, ताजा एवं स्वच्छ खुराक दें और नमी वाली जगह से बचायें।

उपचार – बकरी को खाना खिलाना बन्द कर दें। बकरी को ऐसा खड़ा रखें कि उसके अगले पैर पीछे के पैरों से ऊंचे रहें। तारपीन तेल 10 मि.ली. + मीठा तेल 20 ग्राम + हींग 5 ग्राम का घोल बनाकर पिलायें। हिमालय बत्तीसा 15 ग्राम + 25 मि.ली. पानी में घोलकर पिलावें। यदि आराम न मिले तो पशु चिकित्सक से सलाह लें।

2. मैगटस व संक्रमित घाव – विशेष प्रजाति की मक्खी के घाव पर बैठकर अण्डे देने तथा इन अण्डों के लारवा में परिवर्तित होने से घाव में कीड़े पड़ जाते हैं। घाव से खून, लाल द्रव्य निकलता रहता है।

- कीड़ों को मारने के लिये घाव पर तारपीन का तेल लगाना चाहिए।
- घाव में मेगोनिल दवा भरकर रुई से बन्द कर दें और 5-6 घन्टे बाद रुई को निकालकर मरे हुए कीड़ों को चिमटी की सहायता से निकाल दें। घाव की नियमित ड्रेसिंग करें।
- ब्यूटोक्स या एक्टोमिन नामक दवा का घोल (1:1000) घाव के अन्दर डालने से भी कीड़े आसानी से मर जाते हैं।
- यह सुनिश्चित हो जाने पर कि घाव में कीड़े नहीं हैं, एंटीसेप्टीक घोल (बीटाडीन घोल या पोटेशियम परमेगनेट) एवं टिंचर आयोडिन, पोवीडीन लोशन से साफ कर जीवाणु नाशक मल्हम (लोरेक्रान, हीमेक्स) लगाना चाहिए।
- एंटीबायोटिक्स बेंजीथीन पेनिसिलिन का इंजेक्शन लगाने से घाव जल्दी भर जाता है।

3. पेट के कीड़े – बकरी के पेट, फेफड़े, लिवर में बहुत से कीड़े, घास/पत्तियों के साथ प्रवेश कर जाते हैं। बकरियों के पेट में कीड़े उनके स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक होते हैं। 6 से 8 माह के बच्चों में यह समस्या ज्यादा होती है।

लक्षण – भूख कम लगना, कमजोरी, पेट बड़ा होना, कमजोरी के कारण दूध कम देना, वजन कम होना, चमड़ी खुश्क होना, दस्त होना, बाल झड़ना, गले में सूजन, खून की कमी।

रोकथाम –

- बकरियों के निवास की साफ-सफाई रखना।
- कृमिनाशक दवा द्वारा –
  - पहली बार एक माह की आयु में
  - 3 से 6 माह तक मासिक
  - वयस्कों को बरसात की शुरूआत और अन्त में
- सप्ताह में एक बार नीम की पत्तियां देने से भी पेट की कीड़े मर जाते हैं।

4. बकरियों में बाह्य परजीवी – बाड़े में अधिक संख्या होने से, चारागाह में एक दूसरे के सम्पर्क में आने से बकरियों में बाह्य परजीवियों का संक्रमण अक्सर देखा जाता है। जूं, किलनी और खुजली बाह्य परजीवियों के कारण होने वाले रोग हैं।

लक्षण – त्वचा में जूं, किलनी और खुजली के प्रकोप से शरीर में खुजली होती है। चमड़ी मोटी, रक्त की कमी, बाल झड़ना, दीवार से रगड़ने के कारण शरीर पर घाव हो सकते हैं। किलनी अन्य रोगों को भी एक दूसरे में फैलाने का काम करती है। कभी-कभी किलनी कुछ विषैले पदार्थ छोड़ती हैं जिससे पिछले पैरों में लकवा भी मार जाता है।

रोकथाम – रोगी पशु को तत्काल अन्य पशुओं से दूर कर देना चाहिए। बाड़े में स्वच्छता रखें और भीड़ अधिक हो तो कम करें। बाड़ा/कोठा, इनकी दीबार और दरवाजों पर आधा लीटर कैरोसीन तथा 10 लीटर पानी का घोल अथवा 5 प्रतिशत डीडीटी का घोल छिड़कना चाहिए। यह घोल हर माह परीजीवियों का प्रकोप खत्म होने तक छिड़कना चाहिए।

बचाव के उपाय –

अंत: परजीवियों से बचाव के लिए निम्न में से कोई एक दवा वर्षाकाल के प्रारम्भ तथा समाप्त होने पर पिलायें।

- **ऐलबेंडाजोल –** 10 मि.ग्राम दवा, बकरी के प्रति किलो शारीरिक वजन पर
- **फैनबेंडाजोल –** 7 मि.ग्राम दवा, बकरी के प्रति किलो शारीरिक वजन पर
- **ट्राइक्लाबेंडाजोल –** 10 मि.ग्राम दवा, बकरी के प्रति किलो शारीरिक वजन पर

बाह्य परजीवियों से बचाव के लिए निम्न में से कोई एक दवा बकरियों पर छिड़काव कर उनको स्नान कराने के लिए उपयोग में लायी जा सकती है।

- **मैलाथियान –** 0.5 से 0.8 प्रतिशत घोल
- **साइपरमैथ्रिन –** 1 मिली लीटर प्रति लीटर में
- **डेल्टामैथ्रिन –** 1 मिली लीटर प्रति लीटर में
- **ब्यूटाक्स –** 3 मिली लीटर प्रति लीटर में

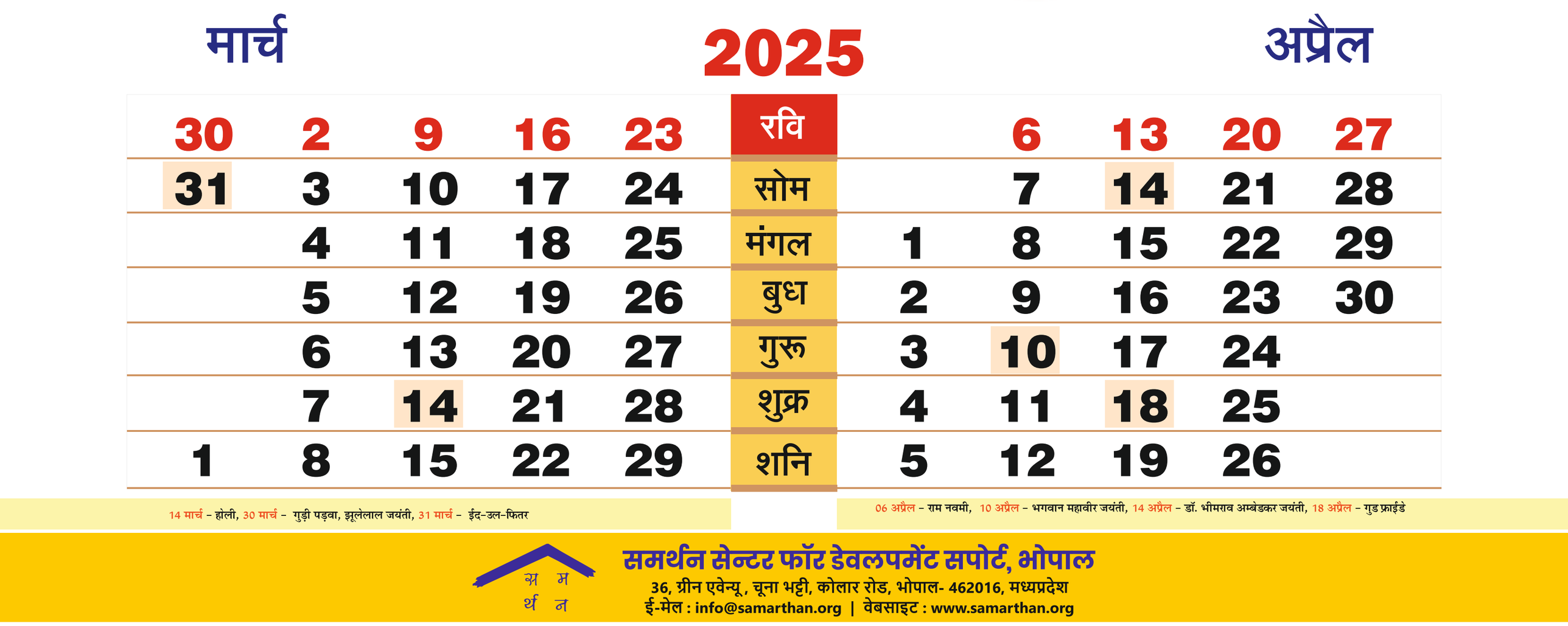

समर्थन सेन्टर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट, भोपाल
36, ग्रीन एवेन्यू, चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल- 462016, मध्यप्रदेश
ई-मेल : info@samarthan.org | वेबसाइट : www.samarthan.org

बकरियों का देशी इलाज एवं टीकाकरण

सर्दी-जुकाम : कैफलॉन पाउडर की 6 से 12 ग्राम मात्रा गुड़ या गर्म पानी के साथ दिन में 2-3 बार देने से सर्दी-जुकाम में लाभ मिलता है।

दस्त :

- गर्मी के मौसम में बकरियों को दस्त होने पर एक गिलास छॉछ/मठा में आधा चम्मच (चाय की चम्मच से) हल्दी मिलाकर पिलाने से दस्त में आराम होता है।
- एक गिलास पानी में 30 ग्राम चाय पत्ती अच्छे से उबालकर, ठण्डा करके पिलाने से दस्त बन्द हो जाते हैं और शरीर में हुई पानी की कमी भी दूर होती है।

पेट के कीड़े : बथुआ की भाजी खिलाने व छांछ में काला नमक डालकर पिलाने से बकरियों के पीट के कीड़े मर जाते हैं।

आंखें आना : यह समस्या गर्मी के मौसम में ज्यादा देखने में आती है। इसके उपचार के लिए फिटकरी युक्त पानी से बकरी की आंखों को साफ करने से लाभ मिलता है।

अफरा या पेट फूलना : बायां पेट फूलना, पेट दर्द या श्वांस लेने में तकलीफ होने पर एक मध्यम आकार के प्याज को पीसकर 2 चम्मच दही और एक चम्मच काला नमक के साथ पिलाने से आराम मिलता है।

घाव, दाद और चर्मरोग : नीम की पत्ती को पानी में उबालकर घाव या दाद को इस पानी से साफ करने से आराम होता है।

परजीवी : 5 लीटर पानी में 50 ग्राम तम्बाकू को उबालकर, इस पानी से बकरियों को नहलाने से पिस्सू, जुंए जैसे परजीवी मर जाते हैं।

कमजोरी : एक लीटर साफ, गर्म पानी में 6 चम्मच शक्कर और आधा चम्मच नमक मिलाकर, दिन में 3-4 बार पिलाने से बकरियों की कमजोरी दूर होती है।

1. गाभिन बकरियों को एंटेरोटॉक्सिमियां का टीका लगवायें। 15 दिन के बाद दोबारा टीका लगवाना बहुत जरूरी है। इसके लिए अपने पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें।
2. बकरियों को नियमित रूप से टीकाकरण करवायें और कृमिनाशक दवाई पिलायें और अपने पशु चिकित्सक से सम्पर्क बनाये रखें।

टीकाकरण

बकरियों में होने वाली कुछ जानलेवा बीमारियों से बचाव के टीके उपलब्ध हैं। अलग-अलग बीमारियों के लिए लगवाये जाने वाले टीकों की जानकारी इस प्रकार है :-

क्र	रोग का नाम	लक्षण	टीके की मात्रा	कहां लगता है	टीकाकरण का समय एवं रोग प्रतिरोधक अवधि
1	गलघोंटू एच. एस.	तेज बुखार, गले में सूजन, श्वांस लेने व निगलने में तकलीफ एवं निमोनिया जैसे लक्षण	बड़ी बकरियों को 5 एम.एल. तथा बच्चों को 2 से 2.5 एम.एल.	चमड़ी के नीचे	मई-जून माह में लगवाना चाहिए। टीका की रोग से बचाने की क्षमता 6 माह है।
2	खुर पका रोग या एफ.एम.डी.	तेज बुखार, मुंह-दांत एवं खुरों के बीच तथा त्वचा पर छाले पड़ना	बड़ी बकरियों को 5 एम.एल. तथा 6 माह से ऊपर के बच्चों को 2 से 2.5 एम.एल. तक	मांस पेशी में	अगस्त माह में लगवाना चाहिए। यह टीका 6 माह तक रोग से बचाव करता है। अत: 6 माह बाद पुन: टीका लगवाना चाहिए।
3	फड़कियां (एंटेरोटॉक्सीमिया)	लड़खड़ा कर चलना, श्वांस लेने में तकलीफ होना, अनियमित श्वांस लेना, पेट फूलना एवं दांत किटकिटाना	5 एम.एल., गाभिन बकरियों को जनने से 3 सप्ताह पूर्व टीका लगवाना चाहिए	मांस पेशी में	साल में कभी भी लगवाया जा सकता है। यह टीका एक साल तक रोग से बचाव करता है।
4.	पी. पी. आर.	तेज बुखार, मुंह-दांत एवं खुरों के बीच और त्वचा पर छाले पड़ना	बड़ी बकरियों को 1 एम. एल. तथा दो माह से नीचे के बच्चों को टीका नहीं लगवाना चाहिए	मांस पेशी में	मई-जून के महीने में लगवाना चाहिए। इससे रोग से बचाव की क्षमता एक साल तक रहती है। अत: एक साल बाद पुन: टीका लगवाना चाहिए।

मई **2025** जून

	4	11	18	25	रवि	1	8	15	22	29
	5	12	19	26	सोम	2	9	16	23	30
	6	13	20	27	मंगल	3	10	17	24	
	7	14	21	28	बुध	4	11	18	25	
1	8	15	22	29	गुरू	5	12	19	26	
2	9	16	23	30	शुक्र	6	13	20	27	
3	10	17	24	31	शनि	7	14	21	28	

12 मई - भगवान बुद्ध जयंती

7 जून - ईद अल - अजहा

समर्थन सेन्टर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट, भोपाल
36, ग्रीन एवेन्यू , चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल- 462016, मध्यप्रदेश
ई-मेल : info@samarthan.org | वेबसाइट : www.samarthan.org

बकरी पालन से जुड़ी सरकारी योजनायें

बैंक ऋण एवं अनुदान पर (10+1) बकरी इकाई प्रदाय योजना

क्र.	योजना	विवरण
1	उद्देश्य	• देशी बकरियों में नस्ल सुधार लाना। • हितग्राहियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना। • मांस तथा दूध उत्पादन में वृद्धि करना।
2	योजना	• योजना प्रदेश के सभी जिलों में संचालित है। • प्रति हितग्राही देशी नस्ल की 10 बकरी और जमनापारी/ बारबरी/ सिरोही/ बीटल नस्ल का एक बकरा बैंक ऋण एवं अनुदान पर दिया जाता है।
3	हितग्राही	• सभी वर्ग के भूमिहीन, कृषि मजदूर, सीमान्त एवं लघु कृषक। • हितग्राही को बकरी पालन का अनुभव हो।
4	योजना इकाई लागत	

क्र.	विवरण	(10+1) बकरी इकाई
1.	स्थानीय देशी नस्ल की 10 बकरी, 6000/- प्रति बकरी	60000.00
2.	जमनापारी/ बारबरी/ सिरोही/ बीटल नस्ल का बकरा–एक	7500.00
3.	बीमा राशि 10.35% की दर से 5 साल के लिए	6896.00
4.	बकरी आहार 3 माह के लिए 250 ग्राम प्रतिदिन, 12 रुपए प्रतिकिलो की दर से	2970.00
	योग	**77456.00**

5	अनुदान प्रति इकाई	• अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति वर्ग अनुदान, 46474 रुपए (60%) • सामान्य वर्ग के लिए अनुदान, 30982 रुपए (40%) • हितग्राही अंशदान इकाई लागत का 10%, शेष बैंक ऋण
6	हितग्राही चयन प्रक्रिया	हितग्राहियों का चयन एवं अनुमोदन ग्राम सभा में। ग्राम सभा से अनुमोदित हितग्राहियों का जनपद पंचायत की सभा में अनुमोदन। जनपद पंचायत के अनुमोदन उपरांत जिले के उप संचालक पशुपालन विभाग, अनुमोदित प्रकरणों को बैंक भेजकर स्वीकृति प्राप्त करेंगे।
7	सम्पर्क	संबंधित जिले के निकटतम पशु चिकित्सा अधिकारी/ पशु औषधालय के प्रभारी/ उप संचालक पशु चिकित्सा।

अनुदान के आधार पर बकरा प्रदाय योजना

क्र.	योजना	विवरण
1	उद्देश्य	देशी/ स्थानीय बकरियों की नस्ल में सुधार लाना।
2	योजना	सभी वर्ग के बकरी पालकों को उन्नत नस्ल का एक नर बकरा अनुदान के आधार पर प्रदाय करने का प्रावधान।
3	हितग्राही	सभी वर्ग के बकरी पालक जिनके पास न्यूनतम 5 बकरी हैं।
4	योजना इकाई	जमनापारी, बारबरी एवं सिरोही नस्ल का एक बकरा
5	इकाई लागत	8300 रुपए (बकरे का मूल्य 7500 रुपए, बीमा राशि एक साल के लिए 2.75% के हिसाब से 206 रुपए, खनिज मिश्रण 394 रुपए एवं प्रशिक्षण पुस्तिका व मॉनिटरिंग कार्ड के लिए 200 रुपए)
6	अनुदान	सभी वर्ग के लिए 75% अनुदान एवं हितग्राही अंशदान 25%
7	हितग्राही चयन प्रक्रिया	हितग्राहियों का चयन एवं अनुमोदन ग्राम सभा में। ग्राम सभा से अनुमोदित हितग्राहियों का जनपद पंचायत की सभा में अनुमोदन। जनपद पंचायत के अनुमोदन उपरांत जिला पंचायत की कृषि स्थाई समिति की बैठक में अनुमोदन प्राप्त करना।
8	सम्पर्क	संबंधित जिले के निकटतम पशु चिकित्सा अधिकारी/ पशु औषधालय के प्रभारी/ उप संचालक पशु चिकित्सा।

जुलाई **2025** अगस्त

	6	13	20	27	रवि	31	3	10	17	24
	7	14	21	28	सोम		4	11	18	25
1	8	15	22	29	मंगल		5	12	19	26
2	9	16	23	30	बुध		6	13	20	27
3	10	17	24	31	गुरू		7	14	21	28
4	11	18	25		शुक्र	1	8	15	22	29
5	12	19	26		शनि	2	9	16	23	30

06 जुलाई – मोहर्रम

09 अगस्त – रक्षा बन्धन, 15 अगस्त – स्वतंत्रता दिवस, 16 अगस्त – कृष्ण जन्माष्टमी

समर्थन सेन्टर फॉर डेवलपमेंट सपोर्ट, भोपाल
36, ग्रीन एवेन्यू , चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल- 462016, मध्यप्रदेश
ई-मेल : info@samarthan.org | वेबसाइट : www.samarthan.org